९६. लगन लागी रहे

दोहा : *ऐसा सुख ना दो हरी, जो तुमको बिसराय*
बडे भागसे आ मिले, अब ना बिरह सहाय ॥

लगन लागी रहे, जलती रहे प्रेम-ज्योती
हियमे आन बसो दिनराती ॥धृ.॥

घटघटके वासी, हे सब सुखराशी, अखंड प्रेमकी मूर्ती
दीन दयाघन करुणासागर, दिव्य सनातन ज्योती ॥१॥

दुखमे कभी ना याद मिटे तेरी, सुखमे कहो क्यों न आती
सुखमे रहूँ या दुखमें रहूँ, पर टूटे नही प्रेमपाती ॥२॥

Scanned by CamScanner

रंगरंगीली ये तेरी माया, अब भी मेरा मन लुभाती
मेहेर मेहेर नाम रटत ही, टूट पडे सब भ्रांती ॥३॥

तेरे बिना ये जीवन सारा, जैसे दिया बिन बाती
मधुसूदन तो दामन धरियो, छोडके जगकी रीती

Scanned by CamScanner